अध्याय 17

सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- वे क्या कारण थे, जिनके कारण भारत में सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलन की शुरूआत करनी पड़ी।
- सामाजिक, धार्मिक सुधार के लिए स्थापित संस्थाएं कौन-कौन सी थीं और उन्होंने किस प्रकार काम किया।
- आधुनिक भारत में प्रमुख सामाजिक, धार्मिक आन्दोलन कौन-कौन से हुए और इसके संस्थापक और इनके योगदान क्या-क्या हैं।

परिचय (Introduction)

19 वीं सदी में भारत बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल से गुजर रहा था। विदेशी शक्तियों द्वारा पराजित होने की चेतना भारतीय जनमानस को पुनर्जागरण हेतु प्रेरित किया। भारत के सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन यूरोपीय पुनर्जागरण से पृथक थे। यूरोपीय पुनर्जागरण का जोर जहाँ साहित्य तथा कला पर था, वहीं भारतीय पुनर्जागरण का सरोकार सामाजिक और राष्ट्रीय था, किन्तु इसमें धार्मिक प्रवृत्तियों का भी अंशत: समावेश था।

सुधार आन्दोलन के कारण (Causes of Reform Movements)

मुगल शासन के पतन के कारण भारत की राजनीतिक एकता समाप्त हो गई तथा क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। केन्द्रीकृत सत्ता के कमज़ोर होने पर भारत में औपनिवेशिक शक्ति का उत्थान हुआ। भारत पर अंग्रेज़ों का प्रभुत्व बढ़ने के साथ आर्थिक शोषण की प्रवृत्तियों में तेज़ी आई। 1813 ई. में ईसाई पादरियों का धर्म-प्रचारकों के रूप में भारत आगमन हुआ, जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर हिन्दू तथा इस्लाम धर्मों की मूल प्रवृत्ति पर चोट की। धर्मान्तरण की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई, जिसकी प्रतिक्रिया भारतीय समाज पर देखने को मिली। पश्चिम के वैज्ञानिक ज्ञान, बुद्धिवाद एवं मानवतावाद के सिद्धांतों का भारतीय जनता पर प्रभाव पड़ा। आधुनिक चेतना के साथ कई सामाजिक वर्ग-पूँजीवाद, श्रमजीवी तथा आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग का आविर्भाव हुआ।

सामाजिक तथा धार्मिक सुधार संस्थाएँ (Social and Religious Reform Organizations)

19वीं शताब्दी में भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं तथा विचारकों द्वारा स्थापित सामाजिक सुधार संस्थाओं ने महत्वपूर्ण कार्य किए, जिसका प्रभाव भारतीय समाज तथा धार्मिक प्रवृत्तियों पर पड़ा। संस्थाओं का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है—

ब्रह्म समाज

वर्ष 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कलकत्ता (कोलकाता) में की। राजा राममोहन राय अरबी, फारसी, संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, लैटिन, यूनानी तथा हिब्रू भाषाओं का ज्ञान रखते थे। इन भाषाओं के ज्ञान से उन्होंने पाश्चात्य दर्शन को आत्मसात् किया, जिसका प्रतिबिम्बन ब्रह्म समाज के रूप में सामने आया। एकेश्वरवाद का समर्थन करते हुए, ब्रह्म समाज ने धर्मों की आपसी एकता का सिद्धान्त दिया। तीर्थ यात्रा तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया तथा धार्मिक ग्रन्थों की व्याख्या के लिए पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया। ब्रह्म समाज ने मूर्तिपूजा का विरोध किया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक आन्दोलन किया। इनके प्रयासों से ही 1829 ई. में सती प्रथा निषेध कानून बनाया गया। 'ब्रह्म समाज' की शाखाएँ संयुक्त प्रान्त, पंजाब तथा मद्रास में

खोली गईं। ब्रह्म समाज के विचारों को लेकर 1865 ई. में केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्रनाथ टैगोर में विवाद हुआ, जिसके बाद केशवचन्द्र सेन मूल ब्रह्म समाज से अलग हो गए तथा आदि ब्रह्म समाज का गठन किया। केशवचन्द्र सेन ने इण्डियन रिफॉर्म एसोसिएशन की स्थापना भी की। केशवचन्द्र सेन द्वारा अपनी अल्पायु पुत्री का विवाह कूच विहार के राजा से कर देने के कारण केशवचन्द्र सेन के अनुयायियों ने आदि ब्रह्म समाज से पृथक होकर साधारण ब्रह्म समाज का गठन कर लिया।

प्रार्थना समाज

ब्रह्म समाज के प्रभाव से महाराष्ट्र में महादेव गोविन्द रानाडे तथा आत्माराम पांडुरंग ने मिलकर 1867 ई. में प्रार्थना समाज की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य हिन्दू धर्म तथा समाज में सुधार लाना था। प्रार्थना समाज ने जाति-व्यवस्था तथा पुरोहितों के आधिपत्य की आलोचना की। प्रार्थना समाज की स्थापना के प्रेरणास्रोत केशवचन्द्र सेन थे। महादेव गोविन्द रानाडे को पश्चिम भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदूत कहा जाता है। 1871 ई. में रानाडे ने सार्वजनिक समाज की स्थापना की। महादेव गोविन्द रानाडे ने 1884 ई. में दक्कन एजुकेशनल सोसायटी तथा 1891 ई. में महाराष्ट्र में विडो रिमैरिज एसोसिएशन की स्थापना की थी। महिलाओं के कल्याण के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना पण्डिता रमाबाई ने की थी।

आर्य समाज

आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में बम्बई में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा की गई। 1877 ई. में इसका मुख्यालय लाहौर को बनाया गया था। हिन्दू धर्म के दोषों को उजागर करने के साथ उन्होंने वेदों के अध्ययन पर भी बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटो' नारा दिया। स्वामी दयानन्द ने गौसेवा के लिए गौरक्षिणी सभा की स्थापना की थी तथा *गौकरूणानिधि* नामक पुस्तक की रचना भी की थी। आर्य समाज का प्रसार पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा महराष्ट्र में अधिक हुआ था। दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्म अपनाने वालों के लिए शुद्धि आन्दोलन चलाया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आगरा में पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थी। इनके सहयोगी-लाला हंसराज ने 1886 ई. में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज (लाहौर) तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना हरिद्वार में की थी।

रामकृष्ण मिशन

1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानन्द ने वेलूर (कलकत्ता) में की थी। मिशन के दो मठ बारानगर (कलकत्ता) एवं मायावती (अल्मोड़ा) में स्थापित किए थे। इन्होंने फरवरी, 1896 ई. में न्यूयॉर्क में वेदान्त सोसायटी का गठन भारतीय धर्म एवं दर्शन के प्रचार के लिए किया था। स्वामी विवेकानन्द ने मूर्तिपूजा, बहुदेववाद आदि का समर्थन किया, क्योंकि इनका मानना था कि ईश्वर साकार एवं निराकार दोनों है और उसकी अनुभूति प्रतीकों के रूप में की जा सकती है।

थियोसोफिकल सोसायटी

थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई. में न्यूयॉर्क (अमेरिका) में मैडम ब्लावाट्स्की तथा कर्नल हेनरी ऑल्काट ने की थी। 1883 ई. में मद्रास (चेन्नई) के निकट अड्यार नामक स्थान पर थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्यालय बनाया गया। 1893 ई. में आयरिश महिला ऐनी बेसेण्ट भारत आईं और उन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी का कार्यभार संभाला। वर्ष 1915 ई. में आयरलैण्ड के होमरूल लीग की तर्ज पर भारत में ऐनी बेसेण्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की। थियोसोफिकल सोसायटी की हिन्दू धर्म की व्याख्या पारम्परिक तथा रूढ़िवादी थी। इसके कई भारतीय नेता—डॉ. भगवान दास तथा एस-सुब्रह्मण्यम् अय्यर हिन्दू रूढ़िवादिता के समर्थक थे, लेकिन इनके सामाजिक सिद्धान्त प्रगतिशील तथा महत्वपूर्ण थे।

यंग बंगाल आन्दोलन

19वीं शताब्दी में बंगाल के बुद्धिजीवियों में एक 'रेडिकल' ग्रुप संगठित हुआ, जिसके विचार अधिक क्रान्तिकारी थे। इस आन्दोलन को 'यंग बंगाल आन्दोलन' नाम से जाना गया। यंग बंगाल आन्दोलन के प्रवर्तक हेनरी विवियन डेरोजियो (1809-31 ई.) थे। एंग्लो इण्डियन हेनरी विवियन डेरोजियो फ्रांस की क्रान्ति से बहुत प्रभावित थे, इन्होंने कलकत्ता के हिन्दू कॉलेज में 1826-31 ई. तक पढ़ाया। डेरोजियो को सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने बंगाल में आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत के रूप में मान्यता दी। इनके प्रमुख अनुयायी रामगोपाल घोष, कृष्ण मोहन बनर्जी तथा महेशचन्द्र घोष थे। हेनरी विवियन डेरोजियो ने एकाडेमिक एसोसिएशन तथा सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज जैसे संगठनों की स्थापना की। साथ ही एंग्लो इण्डियन हिन्दू एसोसिएशन, बंगहित सभा तथा डिबेटिंग क्लब का भी गठन किया। डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है। डेरोजियो की 22 वर्ष की उम्र में हैजे के कारण मृत्यु हो गई। इस आन्दोलन ने युवाओं को विवेकपूर्ण ढंग से सोचने, सभी आधारों के प्रमाणिकता की जाँच करने, स्वतंत्रता एवं समानता की भावना से काम करने के लिए प्रेरित किया।

अलीगढ़ आन्दोलन

अलीगढ़ आन्दोलन का प्रवर्तन सर सैयद अहमद खाँ ने किया। इन्होंने इस्लाम में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी आवाज उठाई। सर सैय्यद अहमद खाँ धार्मिक सहिष्णुता तथा सभी धर्मों के अन्तर्निहित एकता पर विश्वास करते थे। 1883 ई. में एक प्रसिद्ध लेख में उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमान को भारत की दो आँखें कहा। इन्होंने मुस्लिम समाज को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से पाश्चात्य शिक्षा को अपनाने पर जोर दिया। 1864 ई. में सैय्यद अहमद ने साइंटिफिक सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसायटी ने कुछ प्रतिष्ठित अंग्रेजी पुस्ताकों का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया। 1875 ई. में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरियण्टल स्कूल की स्थापना की। यह 1878 ई. में कॉलेज बन

गया और वर्ष 1820 ई. में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया। चिराग अली, अल्ताफ हुसैन अली, नजीर अहमद तथा मौलाना शिबली नोमानी अलीगढ़ आन्दोलन के प्रमुख नेता थे।

देवबन्द आन्दोलन

उत्तर-प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द स्थान पर 1867 ई. में कुरान तथा हदीश की शिक्षाओं के प्रसार के लिए एक मदरसे की स्थापना की गई थी। इस आंदोलन की शुरूआत मोहम्मद कासिम, ननौतवी एवं रशीद अहमद गंगोही के द्वारा की गई थी। देवबन्द शाखा ने 1885 ई. में बनी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया, किन्तु 1888 ई. में देवबन्द के उलमा ने सैयद अहमद खाँ की बनाई संयुक्त भारतीय देशभक्त सभा तथा मोहम्मडन एंग्लो ओरियण्टल एसोसिएशन के विरुद्ध फतवा जारी किया। महमूद उल हसन (1851-1920) ने देवबन्द शाखा के धार्मिक विचारों को राजनीतिक तथा बौद्धिक रंग देने का प्रयत्न किया।

पारसी सुधार आन्दोलन

नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी तथा एस.एस.बंगाली ने 1851 ई. में रहनुमाई मजदयासन सभा की स्थापना की। इस सभा ने अपने सन्देश को पारसियों तक पहुँचाने के लिए फारसी पत्रिका रफ्तगोफ्तार (सत्यवादी) चलाई। के.आर.कामा ने पारसियों में शिक्षा के प्रसार के सम्बन्ध में उल्लेखनीय कार्य किए। बी.एम.मालाबारी ने भी अपनी जाति की बहुत सेवा की।

सिक्ख धर्म सुधार आन्दोलन

सिक्खों के धर्म सुधार आन्दोलन के अग्रदूत दयालदास थे। उन्होंने सिक्खों में प्रचलित हिन्दू रीति-रिवाजों के विरुद्ध उपदेश दिए और मूर्तिपूजा का विरोध किया। उनके अनुयायी निरंकारी कहलाए। उनके पुत्र दरबार सिंह ने निरंकारी आन्दोलन को पंजाब और उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में प्रचार-प्रसार किया। 1815 ई. में रामसिंह के नेतृत्व में नामधारियों का सिक्ख सुधार आन्दोलन शुरू हुआ।

1892 ई. में अमृतसर में खालसा कॉलेज की स्थापना की गई, जो आगे चलकर गुरूनानक विश्वविद्यालय बना। वर्ष 1920 में गुरूद्वारों के महन्तों के खिलाफ अकाली आन्दोलन चला।

दलित सुधार आन्दोलन (Dalit Reform Movements)

सत्य शोधक समाज

इस आन्दोलन की शुरूआत सर्वप्रथम महाराष्ट्र में हुई और वहाँ पर इसका नेतृत्व ज्योतिबा फुले ने किया। उन्होंने निम्न जातियों के लोगों, स्त्रियों आदि के कल्याण के लिए कार्य करते हुए, 1876 ई. में पूना नगरपालिका की सदस्यता ग्रहण की। 1888 ई. के बाद लोग इन्हें महात्मा कहने लगे। ज्योतिबा फुले ने 1872 ई. में एक पुस्तक *गुलामगीरी* लिखी। इनकी एक अन्य पुस्तक *सार्वजनिक सत्य धर्म* पुस्तक भी है।

आत्म-सम्मान आन्दोलन

1920 के दशक में रामास्वामी नायकर उर्फ पेरियार ने इस आन्दोलन का सूत्रपात किया। आत्म-सम्मान आन्दोलन में बिना ब्राह्मण की सहायता के विवाह करने, मन्दिरों में जबरन प्रवेश करने तथा मनुस्मृति को जलाने आदि का अभियान चलाया। पेरियार ने तमिल भाषा में रामायण की रचना की, जिसे सच्ची रामायण कहा जाता है।

वायकोम सत्याग्रह

यह आन्दोलन छुआछूत के विरुद्ध केरल में चलाया गया था, त्रावनकोर के एक गाँव वायकोम से इस आन्दोलन की शुरूआत हुई। इस आन्दोलन के माध्यम से 30 मार्च, 1924 को केरल कांग्रेस कमेटी ने हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश कराया।

गुरुवायूर सत्याग्रह

निम्न वर्गों के सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान व छूआछूत उन्मूलन के लिए संघर्ष वर्ष 1924 के बाद भी चलता रहा। के. कलप्पण के प्रयासों से केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने वर्ष 1931 ई. में मन्दिर प्रवेश का प्रश्न फिर उठाया। केरल में अनेक जनसभाएँ आयोजित की गईं तथा 1 नवम्बर, 1931 को गुरूवायूर में मन्दिर प्रवेश सत्याग्रह छेड़ने का निर्णय लिया गया। 21 सितम्बर, 1932 को के. केलप्पण के आमरण अनशन पर बैठने के कारण, इस सत्याग्रह ने जुझारू रूख अख्तियार कर लिया। नवम्बर, 1936 में त्रावनकोर के महाराजा ने सरकार नियंत्रित सभी मन्दिरों को हिन्दुओं की सभी जातियों के लिए खोलने का आदेश जारी किया।

दक्षिण भारत में सुधार आन्दोलन (Reform Movement in South India)

1864 ई. में ब्रह्म समाज की गतिविधियों के प्रभाव एवं ईसाई मिशनरियों की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मद्रास में वेद समाज की स्थापना हुई। श्री नायडू ने 1871 ई. में इसे पुनर्गठित किया। वेद समाज, ब्रह्म समाज ऑफ साउथ इंडिया के नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रमुख नेता एम. बुचीआह पन्तुलू तथा आर. वेंकटरत्नम थे। मद्रास हिन्दू संघ की स्थापना वीरेसलिंगम पुत्तलू द्वारा विधवा महिलाओं की स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से किया गया। 1892 में वीरेसलिंगम तथा आर. वेंकटरत्नम मद्रास में हिन्दू समाज सुधार संघ की स्थापना की गई।

तालिका 17.1: आधुनिक भारत में प्रमुख सामाजिक-धार्मिक आंदोलन

क्र.सं.	आंदोलन/संस्था	वर्ष	स्थान	संस्थापक	विवरण
1.	आत्मीय सभा	1815	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	हिन्दू धर्म की कुरीतियों पर प्रहार तथा एकेश्वरवाद का प्रचार मुख्य उद्देश्य ही था।
2.	ब्रह्म समाज	1828	कलकत्ता	राजा राममोहन राय	शुरू में ब्रह्म सभा नाम था, लक्ष्य उपर्युक्त ही था।
3.	धर्म सभा	1829	कलकत्ता	राधाकान्त देव	ब्रह्म समाज का प्रतिद्वंद्वी, सनातन हिंदू धर्म का समर्थन।
4.	तत्वबोधिनी सभा	1839	कलकत्ता	देवेन्द्रनाथ टैगोर	लक्ष्य-राजा राममोहन राय के विचारों का प्रचार।
5.	परमहंस मंडली	1849	बम्बई	अनुपलब्ध	लक्ष्य-जाति-प्रथा के बंधनों को तोड़ना।
6.	राधास्वामी सत्संग	1861	आगरा	तुलसीराम	एकेश्वरवाद का प्रचार। (शिवदयाल)
7.	भारतीय ब्रह्म समाज	1866	कलकत्ता	केशवचन्द्र सेन	राजा राममोहन राय की मूल संस्था से अलग इस संगठन की स्थापना की गयी।
8.	प्रार्थना समाज	1867	बम्बई	डॉ-आत्माराम	पांडुरंग हिंदू धर्म के विचार व व्यवहार में सुधार ही इसका लक्ष्य था।
9.	आर्य समाज	1875	बम्बई	स्वामी दयानन्द सरस्वती	मुख्य लक्ष्य हिंदू धर्म में सुधार करना और हिंदुओं के धर्म परिवर्तन को रोकना।
10.	थियोसोफिकल सोसायटी	1875		मैडम ब्लावत्स्की एवं कर्नल आल्कॉट	मुख्य लक्ष्य प्राचीन धर्म और दर्शन को प्रोत्साहन, विश्व बन्धुत्व की स्थापना।
11.	साधारण ब्रह्म समाज	1878	कलकत्ता	आनन्द मोहन बोस,	ब्रह्म समाज के दूसरे विघटन शिवनाथ शास्त्री का परिणाम।
12.	दक्कन ऐजूकेशन	1884	पूना	जी.जी. अगारकर	देश की सेवा के लिए नौजवानों सोसायटी की शिक्षा प्रणाली में सुधार।
13.	भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक	1887	बम्बई	एम.जी. रानाडे	भारतीय समाज की सामाजिक कुरीतियों को हटाना तथा स्त्रियों की प्रगति की ओर ध्यान देना।
14.	देव समाज	1887	लाहौर	शिवनारायण अग्निहोत्री	लक्ष्य-ब्रह्म समाज के समान।
15.	रामकृष्णन मिशन	1897	बेलूर	स्वामी विवेकानंद	मुख्य लक्ष्य-मानव कल्याण तथा समाज सेवा।
16.	भारत सेवक समाज (सर्वेण्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी)	1905	बम्बई	गोपाल कृष्ण गोखले	मातृभूमि की सेवा के अनेक क्षेत्रों में भारतीयों को शिक्षा देना।

तालिका 17.2: उपाधियाँ/समाचारा पत्र/पुस्तक

क्र.सं.	व्यक्ति	उपाधि	समाचार पत्र-पुस्तक
1.	रविन्द्रनाथ टैगोर	'गुरूदेव' की उपाधि गाँधी जी द्वारा दी गई	गीतांजली, गोरा
2.	गाँधी जी	'महात्मा' की उपाधि रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा और 'राष्ट्रपिता' की उपाधि सुभाष चन्द्र बोस द्वारा	यंग इंडिया (अंग्रेजी में) नवजीवन (गुजराजी में), हरिजन पत्र का प्रकाशन किया गया।

(Continued)

क्र.सं.	व्यक्ति	उपाधि	समाचार पत्र-पुस्तक
3.	सुभाष चन्द्र बोस	'नेताजी' की उपाधि एडोल्फ हिटलर द्वारा दी गया।	इंडियन स्ट्रगल नामक पुस्तक
4.	विवेकानन्द	'स्वामी' की उपाधि महाराजा खेतड़ी द्वारा दी गयी।	
5.	लाला-लाजपत राय	--	अन हैप्पी इंडिया
6.	बाल गंगाधर तिलक	--	गीतारहस्य, मराठा, केसरी
7.	बंकिम चन्द्र चटर्जी	--	आनन्दमठ
8.	एनीबेसेंट	--	न्यू इंडिया, कॉमनवील
9.	प. जवाहर लाल नेहरू	--	डिस्कवरी ऑफ इंडिया
10.	सरोजनी नायडू		ब्रोकेन विंग, सांग ऑफ इंडिया
11.	दादाभाई नौरोजी	--	पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल ऑफ इंडिया, इंग्लैंडंडेट्स टू इण्डिया

अध्याय सार संग्रह

- भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन की प्रक्रिया का सूत्रपात 19 वीं शताब्दी (उपनिवेशी शासनकाल) में हुआ।
- कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज और वेदांत कॉलेज की स्थापना राजा राम मोहन राय द्वारा की गई।
- प्रार्थना समाज परमहंस सभा का पुनर्गठित रूप था जिसकी स्थापना पांडुरंग ने की थी।
- थियोसोफिल सोसाइटी ने विभिन्न धर्मों को मजबूत बनाने की वकालत की तथा शिक्षित हिन्दुओं को हिन्दू धर्म की प्राचीन समृद्ध विरासत से अवगत कराया।
- केशवचन्द्र सेन ने वेद समाज की स्थापना की प्रेरणा दी। इस संगठन के संस्थापक के, श्रीधरालु नायडू थे।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर के तप्तबोधिनी सभा का मुख्य लक्ष्य राजा राम मोहन राय के विचारों का प्रचार करना था।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से 1856 में विधवा विवाह कानून बनाया गया।
- 1873 ई. में ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की।
- 19 वीं शताब्दी में मुस्लिम समाज और धर्म सुधार के लिए एक आन्दोलन चला, जिसे अहमदिया आन्दोलन कहा जाता है।
- मुहम्मद-उल-हसन के नेतृत्व में देवबंद स्कूल के धार्मिक विचारों को नया राजनीतिक एवं बौद्धिक स्वरूप प्रदान किया गया।
- आर्य समाज की स्थापना 1875 में बम्बई में की गई थी।
- आर्य समाज के पवित्र ग्रंथ का नाम सत्यार्थ प्रकाश है।
- स्वामी विवेकानन्द के रामकृष्ण मिशन का मुख्य लक्ष्य मानव कल्याण तथा समाज सेवा है।
- आर्य समाज द्वारा चलाये गये शुद्धि आंदोलन तथा गौ रक्षा आन्दोलन विवादास्पद रहे।
- डेरोजियों की तुलना सुकरात से की जाती है। इसे बंगाल में आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत कहा जाता है।
- स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण के बाद न्यूयार्क हेराल्ड ने लिखा कि 'उनको सुनने के बाद हम यह अनुभव करते हैं कि ऐसे ज्ञान सम्पन्न देश में अपने धर्म प्रचारक भेजना कितना मूर्खतापूर्ण है।'

18 अध्याय

कृषक और जनजातीय आन्दोलन

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- भारत में कृषक आन्दोलन की शुरूआत क्यों हुई और यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा।
- आदिवासी जनजाति आन्दोलन ने किस प्रकार अपनी मांगें रखीं और उनके आन्दोलन के क्या तरीके थे।
- क्षेत्रीय जनजाति आन्दोलन किस प्रकार ब्रिटिश शासन के दौरान अपनी शर्तें मनवाने में सक्षम रहा।

किसान आन्दोलन (Peasant Movement)

ब्रिटिश शासन के दौरान राजस्व व्यवस्था में मध्यस्थों की एक नई श्रेणी सामंतों-ज़मींदारों का विकास हुआ। बढ़ते हुए लगान के कारण किसान ऋण लेने को बाध्य हुए, जिससे साहूकारों के एक वर्ग का उदय हुआ। किसानों के द्वारा इन वर्गों के विरुद्ध विभिन्न विद्रोह किए गए, जिनका मुख्य उद्देश्य सामन्तशाही बन्धनों को तोड़ना अथवा कमज़ोर करना था। उन्होंने भूमि लगान बढ़ाने, बेदखली और साहूकारों की ब्याजखोरी के विरुद्ध विरोध प्रकट किया। वर्ग जागृति के अभाव में अथवा कृषकों का सुव्यवस्थित संगठन न होने के कारण, 19वीं शताब्दी के कृषक विद्रोह ने राजनैतिक रूप धारण नहीं कर सका।

रामोसी आन्दोलन (1822–1841 ई.)

रामोसी आन्दोलन अकाल तथा भूख की समस्या के चलते महाराष्ट्र में प्रारम्भ हुआ था। चित्तर सिंह एवं नरसिंह पेतकर इसके प्रमुख नेता थे। रामोसियों ने सतारा के आस-पास के क्षेत्रों को लूटा तथा किलों पर भी धावा कर दिया। 1825-26 ई. में भयंकर अकाल और अन्न की कमी के कारण इन्होंने उमाजी के नेतृत्व में एक बार फिर विद्रोह किया। यह विद्रोह लगातार 1841 ई. तक चलता रहा। इस काल में नरसिंह पेतकर के नेतृत्व में विस्तृत दंगे हुए।

मोपला विद्रोह (1836–1885 ई.)

मोपला लोग केरल के मालाबार क्षेत्र में रहने वाले अरब एवं मलयाली मुसलमान थे। ये अधिकतर छोटे किसान या व्यापारी थे। अंग्रेज़ों ने भू-स्वामियों के अधिकार का विस्तार करके उच्च जातीय हिन्दू नम्बूदारी एवं नायर भू-स्वामियों की शक्ति बढ़ा दी थी। प्रतिक्रिया स्वरूप मोपलाओं ने विद्रोह किया। इस विद्रोह ने साम्प्रदायिक रूप धारण कर लिया, क्योंकि अधिकांश भू-स्वामी हिन्दू थे तथा काश्तकार मुसलमान थे। नम्बूदारी और नायर जैसे उच्च जाति के भू-स्वामियों को शासन, पुलिस और न्यायालय से संरक्षण प्राप्त था। मुसलमानों के धार्मिक गुरु तथा स्थानीय नेता अली मुदलियार को गिरफ्तार कराने के प्रयास में मस्जिदों पर छापे मारे गए, परिणामस्वरूप पुलिस को विद्रोहियों के आक्रामक तेवरों का सामना करना पड़ा, कई विद्रोही मारे गए। वर्ष 1921 में अली मुसलियार के नेतृत्व में पुनः इस आन्दोलन की शुरूआत हुई, जोकि द्वितीय मोपला विद्रोह के नाम से जाना जाता है। कृषकों में असन्तोष इस आन्दोलन का मूल कारण था, परन्तु कालान्तर में इसने साम्प्रदायिक रूप ले लिया। महात्मा गाँधी, अबुल कलाम आज़ाद और खिलाफत आन्दोलन के नेता शौकत अली ने मोपला विद्रोहियों का समर्थन किया, लेकिन मोपला विद्रोह की उग्रता को देखते हुए सरकार ने सैनिक शासन की घोषणा कर दी, परिणामस्वरूप मोपला विद्रोह को कुचल दिया गया।

नील विद्रोह (1859–1860 ई.)

बंगाल के वे किसान जो अपने खेतों में चावल की खेती करना चाहते थे, उन्हें यूरोपीय नील बागान मालिक नील की खेती करने के लिए बाध्य करते थे। ददानी प्रथा के तहत किसानों को मामूली अग्रिम रकम देकर करारनामा कर लिया जाता था जो बाजार भाव से काफी कम होता था। अदालतें भी यूरोपीय नील उत्पादकों का ही पक्ष लेती थीं। नील विद्रोह की पहली घटना बंगाल के